रमन् लोक कला महोत्सव

दिनांक: 28 फरवरी से 2 मार्च 2020 तक

CVRU
DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

रविन्द्रनाथ टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र, छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजन पीठ

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर | Ph. 9827979020, 7000774184

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोक कला महोत्सव 2020

प्रस्तावना : डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय छ.ग. निजी विश्वविद्यालय का (स्थापना एवं संचालन) अधिनियम 2005 के प्रावधानों के अनुसार बिलासपुर जिला के दुरस्थ ग्रामीण वनचंल ग्राम कोटा में 3 नवम्बर 2006 को की गई। विश्वविद्यालय के स्थापना के समय से ही आसपास के ग्रामीण दूरस्थ अंचलों के विद्यार्थियों में विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा एवं संचार तकनीक से युवाओं को जोड़ने के लिए कार्य करती आ रही है। विश्वविद्यालय को गुणवता, स्वच्छता एवं गुणवतापूर्ण शिक्षा के लिए अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके है। साथ ही साथ विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा संचालन हेतु तथा प्रवेशित विद्यार्थियों को सार्वधिक रोजगार प्रदान करने के लिए भी पुरस्कृत किया जा चुका है। विश्वविद्यालय NIRF में भी रैंकिग प्राप्त कर चुकी हैं एवं NAAC द्वारा B+ ग्रेड प्रत्यायित किया गया है। विश्वविद्यालय अपने उत्कृष्ट अधोसंरचना एवं उच्च स्तरीय पुस्तकालय के लिए मध्य भारत में जाना जाता है, विश्वविद्यालय में केन्द्र एवं राज्य सरकार के योजनाओं के अनुरुप विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए प्रधानमंत्री कौशल केन्द्र, दीनदयाल उपाध्याय कौशल विकास केन्द्र एवं अनेक उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किये गये है। विश्वविद्यालय में भाषा की शिक्षा हेतु लैंगवेज लेब की व्यवस्था की गई है। आत्मनिर्भर भारत, समग्र भारत हेतु रमन् इनिक्वेशन सेन्टर स्थापित किये गये हैं। अपने विद्यार्थियों को कलात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा आसपास के गाँवों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरुकता लाने लोककला, लोककला संस्कृति के संरक्षण एवं संर्वधन तथा लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने के लिए समुदायिक रेडियो (रेडियो रामन् 90.4) की स्थापना गई है। ग्रामीण प्राद्यौगिकी विभाग के माध्यम से विद्यार्थियों एवं क्षेत्र के युवाओं को ग्रामीण तकनीकी से जोड़ते हुए रोजगार स्वरोजगार के लिए उन्मुख किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अपने स्थापना काल से ही छत्तीसगढ़ के उत्कृष्ठ परंपरा लोककला एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं इससे अपने विद्यार्थियों एवं प्रदेश के युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिये संकल्पित है। विलुप्त होती कला एवं संस्कृति को मंच प्रदान करने तथा इसे शिक्षा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील रहा है। सन् 2010 में कला संकाय का स्थापना कर क्षेत्र के कला एवं पुरातातविक संपदा से विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए इतिहास, समाजशास्त्र, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, प्राच्यभाषा विभाग आदि में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षा प्रारंभ की। विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष होने वाले कुल उत्सव में विद्यार्थियों के कलात्मक रुझान एवं लोककला के प्रति उनके जुड़ाव को देखते हुए विश्वविद्यालय ने छत्तीसगढ़ लोककला एवं संस्कृति केन्द्र स्थापित किया गया।

Dr. C.V. Raman University ★ Registrar ★ Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रविन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति केन्द्र की स्थापना की गई नवम्बर माह को छत्तीसगढ़ लोककला उत्सव हेतु निर्धारित किया गया जो की प्रदेश एवं विश्वविद्यालय की स्थापना माह है। विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी भाषा को जन-जन की भाषा से प्रशासनिक भाषा एवं राजभाषा बनाने के लिए एवं छत्तीसगढ़ी भाषा में शोध एवं सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ तथा अनेक साहित्यिक गतिविधि हेतु वनमाली सृजनपीठ की स्थापना की गई। कला एवं संस्कृति की शिक्षा हेतु ललित कला विभाग एवं रायगढ़ कत्थक केन्द्र की स्थापना की गई।

प्रदेश के युवापीढ़ी एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति के प्रति रुझान तो है, परन्तु युवापीढ़ी में छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक प्रतीकों कला-संस्कृति एवं परम्पराओं की जानकारी के अभावों को देखते हुए विश्वविद्यालय परिसर विद्यार्थियों के शोध एवं सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए लोककला केन्द्र जिसमें की छत्तीसगढ़ की सभी लोक कलाओं, लोक संस्कृति, लोक संगीत, लोक परम्पराओं जानकारी प्रदर्शित/स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय परिसर में छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली के प्रतीक चिन्हों को संरक्षित करने तथा इससे भावी पीढ़ी को जोड़ने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना की गई। संजोही में विद्यार्थियों द्वारा अपने लोककला एवं संस्कृति के विरासत तथा छत्तीसगढ़ी जीवन के प्रतीक चिन्हों को संकलित करने में विद्यार्थियों की भूमिका उल्लेखनीय रही। वर्तमान में विश्वविद्यालय का छत्तीसगढ़ी कला केन्द्र एवं छत्तीसगढ़ी संजोही शोध एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिये उत्कृष्टता केन्द्र के रुप में कार्य कर रहा है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्टता केंद्र

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना की गई है। जो निम्नानुसार है:-

1. रामन सेंटर फॉर साइंस कम्युनिकेशन,
2. सेंटर फॉर बायोटेक्नालॉजी रिसर्च,
3. सेंटर फॉर छत्तीगढ़ी लोक कला, संस्कृति एवं साहित्य,
4. सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर रुरल टेक्नोलॉजी एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट
5. सेंटर फॉर रिनिवेबल ग्रीन एनर्जी,
6. सेंटर फॉर परफार्मिंग आर्ट्स एंड रायगढ़ कला कथक,
7. सेंटर फॉर फ्यूचर स्किल एकेडमी,
8. सेंटर फॉर रिमार्ट सेसिंग एंड जीआईएफ
9. सेंटर फॉर इंक्यूबेशन एंड स्टार्टअप,
10. सेंटर फॉर एक्सीलेंस फॉर एडवांस एनवारमेंटल रिसर्च,
11. छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजन पीठ
12. रविन्द्रनाथ टैगोर लोककला केंद्र
13. वनमाली सृजन पीठ

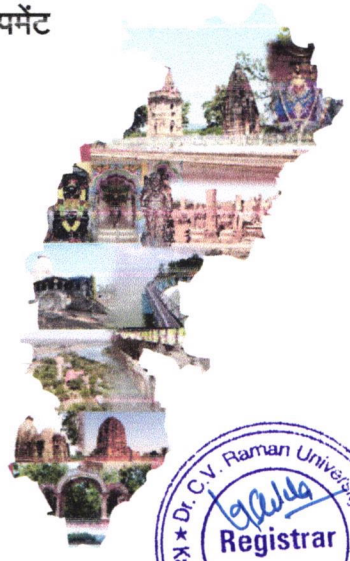

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोक कला महोत्सव

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा प्रदान करने के साथ प्रदेश की लोककला, संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण एवं संर्वधन के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके लिए वर्ष 2019 से रामन् लोककला महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें छत्तीसगढ़ के सभी जिलों, दूरस्थ ग्रामीण अंचल और वनांचलों के लोक कलाकारों को मंच प्रदान किया जाता है और वे अपने कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हैं। इस महोत्सव का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की लोककला, संस्कृति और साहित्य संरक्षण और संर्वधन के साथ उसके मूल रुप में ही भावी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना है। इस महोत्सव में वर्ष 2020 में रायगढ़ कथक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के सभी राज्यों के राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों ने शिरकत की थी। इस महोत्सव ने कम समय में ही देश भर में अपनी ख्याति अर्जित की है।

लोककला उत्सव में प्रमुख रुप से छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचलों जैसे- लोरमी, बेलगहना, भिलाई, पामगढ़, मुंगेली, बिलासपुर क्षेत्र के स्थानीय कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के नृत्यों जैसे - पंथी, करमा, बांस, पंडवानी, छत्तीसगढ़ी नाटक, राजा कोकलवा, बांसुरी वादन का भी मंचन हुआ। इस लोक उत्सव में स्थानीय ग्रामीण के साथ-साथ बस्तर, रायगढ़, भिलाई, तमनार, रायपुर क्षेत्र के हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प जैसे बांस कला, बेल मेटल आर्ट, काष्ट कला, मृदा शिल्प आदि के साथ-साथ विभिन्न शासकीय विभागों की प्रदर्शनी एवं स्टाल भी लगाए गए।

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय द्वारा क्षेत्र एवं प्रदेश के विभिन्न कलाओं को संरक्षित एवं सर्वधित करने तथा छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति को मूलरुप से जीने वाले लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर रामन् लोककला महोत्सव प्रांरभ किया गया। इस महोत्सव का आयोजन तीन दिन तक किया जाता है, जहां पर विभिन्न विधाओं का रंगारंग प्रस्तुति लोक कलाकारों द्वारा किया जाता है। वहीं रोजमर्रा के कार्यो में समाज की आत्मनिर्भरता एवं उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए छत्तीसगढ़ी ग्रामीण प्रौद्योगिकी को विभिन्न स्थलो में प्रदर्शित किया गया था, जो युवाओं को आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार के लिए प्रेरित करता है तथा महोत्सव में छत्तीसगढ़ की पुरातन मनोरंजन प्रणाली मेला के प्रारुपों को भी जीवंत किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ में लोक गीतों, लोक नृत्यों, लोक नाट्य और लोक गाथाओं का समृद्ध इतिहास रहा है, लेकिन अब अनेक लोक कलाएं लुप्त होने की कगार पर हैं इनके संरक्षण के प्रयास की ओर विश्वविद्यालय ने अपना कदम बढ़ाया जिसने रामन् लोक कला महोत्सव का रुप लिया। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकार आधुनिकता की चकाचौंध में विलुप्त न हो जाए इसलिए प्रदेश के कलाकारों की कला को मंच प्रदान कर एवं भावी पीढ़ी को उनकी कला हस्तांतरित करने के उद्देश्य से डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय के द्वारा तीन दिवसीय रामन् लोककला महोत्सव का आयोजन 2019 में पहली बार आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ऐसी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना है जो प्रदेश की लोक कला को मूलरुप में समेटे होने के बाद भी मंच प्राप्त न कर पाया हो। छत्तीसगढ़ राज्य में ऐसी अनेक लोक विधाएं और लोक कलाकार हैं जिनके विषय में लोग अपरिचित हैं और यदि परिचित हैं भी, तो युवा पीढ़ी उन विधाओं से जो अपने मूल स्वरुप से अलग हो चुके हैं। ऐसी विलुप्त होती लोककला को सरंक्षित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव आयोजित करने की पहल की है, जिसका एक और उद्देश्य विद्यार्थियों एवं प्रदेश के रहवासियों में छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक संस्कृति और लोक साहित्य के प्रति जागरुकता लाना और अंचल की परंपरा और संस्कृति के मूल रुप को सवंर्धित करना है, साथ ही छत्तीसगढ़ की विलुप्त होती संस्कृति और परंपरा का ज्ञान भरपूर मात्रा में विद्यार्थियों एवं लोगों तक पहुंचे, यही इस आयोजन का मूल उद्देश्य है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

कार्यक्रम विवरण

रामन् लोक कला महोत्सव

दिनांक: 28 फरवरी से 2 मार्च 2020 तक

समय: शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक

DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर

दिनांक: 28 फरवरी 2020
समय - सायं 6.00 बजे

मुख्य कार्यक्रम

रायगढ़ कथक पर आधारित प्रस्तुति : अलबेला रायगढ़
डॉ. मानव महन्त
एवं समूह, ग्वालियर

छत्तीसगढ़ी फोक बैंड
पांच मितान, खैरागढ़
(हितेंद्र वर्मा)

लोक कला मंच
हिलेन्द्र ठाकुर समूह

लोरिक चंदा
रामाधार साहू, कंचादूर, दुर्ग

रावत नाच
एनसीसी (सीवीआरयू) की प्रस्तुति

पंडवानी
रविन्द्र वर्मा, बिलासपुर

समूह नृत्य
टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र

दिनांक: 29 फरवरी 2020
समय - सायं 6.00 बजे

मुख्य कार्यक्रम

ढोला मारू
रजनी रजक, भिलाई

लोकगीत
नवारंग समूह, मन्नू राजाकांत

समूह नृत्य (गेड़ी,करमा)
टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र

सुआ, करमा, ददरिया नृत्य
मनबोध सिंह श्याम, भैंसाझार

छत्तीसगढ़ी नाटक
एनएसएस (सीवीआरयू)
की प्रस्तुति

जसगीत

अनुज नाइट
पद्म श्री अनुज शर्मा
एवं सहकलाकारों की प्रस्तुति

दिनांक: 01 मार्च 2020
समय - सायं 6.00 बजे

मुख्य कार्यक्रम

भरथरी
अमृता बारले,भिलाई

पंथी नृत्य
साथेलाल रात्रे,मुंगेली

बांस गीत
रावेली ग्रुप

समूह नृत्य
टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र

फाग गीत
ग्राम बीजा की प्रस्तुति

कला मंच
स्वर साधना लोक कला मंच

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन प्रथम दिवस

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय में रामन् लोक कला महोत्सव - 2020 रंगारंग आगाज हुआ। इस तीन दिवसीय लोक कला महोत्सव का शुभारंभ दिनांक 28 फरवरी 2020 से 01 मार्च 2020 तक हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रगीत एवं कुलगीत रामन बैंड के माध्यम से गाया गया महोत्सव के पहले दिन प्रदेश के लोक कलाकारों ने झमाझम प्रस्तुति दी और छत्तीसगढ़ की संपूर्ण छटा सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय में बिखेरी। इस अवसर पर लोक कला छत्तीसगढ़ी परिधान कला, सरकारी व गैर सरकारी विभागों ने भी अपने स्टॉल लगाए।

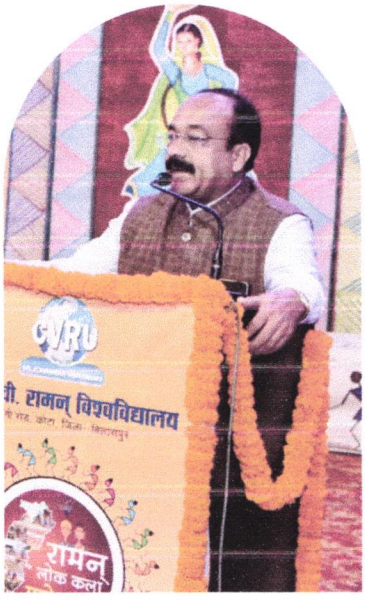

मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित बिलासपुर सांसद अरुण साव ने कहा कि डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय यहां लोक कलाकारों को मंच और अवसर प्रदान कर रहा है। निश्चित ही यहां के कलाकार देश और विदेश में अपनी प्रतिभा का परचम लहराएंगे। इस बात के लिये सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ और यहां के लोक कलाकार विश्वविद्यालय के प्रति ऋणी रहेंगे।

विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित बिलासपुर विधायक श्री शैलेष पाण्डेय ने कहा कि उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के साथ कला संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन भी विश्वविद्यालय का उद्देश्य है यह विश्वविद्यालय अपने उद्देश्य में निरंतर आगे बढ़ रहा है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने छत्तीसगढ़ को उर्जावान और प्रगतिशील विश्वविद्यालय दिया है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

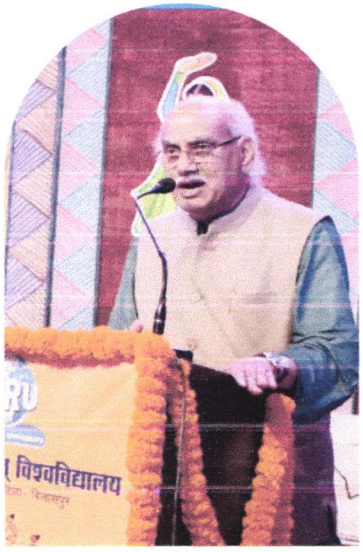

कार्यक्रम के अध्यक्ष संतोष चौबे ने कहा कि विश्वविद्यालय को आदिवासी अंचल में स्थापित करने का एक उद्देश्य यह भी है कि लोक कला को संरक्षित एवं संवर्धित किया जाए। आज रुरल टेक्नालॉजी, परंपराएं, शिक्षा, संस्कृति और कला को फिर से देखने की जरुरत है। इसके लिए विश्वविद्यालय लोककला को संरक्षित एवं संवर्धित करने पिछले साल से यह महोत्सव आयोजित करता आ रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि मनुष्य को जीवन में सफल होने के लिए कला, संगीत एवं साहित्य को आत्मसात करना चाहिए, आज विद्यार्थियों को इस बात पर अमल करना चहिये कि वे जो भी विषय चुन रहें हो उनमें एक विषय कला का हो, क्योंकि भावनाओ को जीवन कला से ही मिलता है।

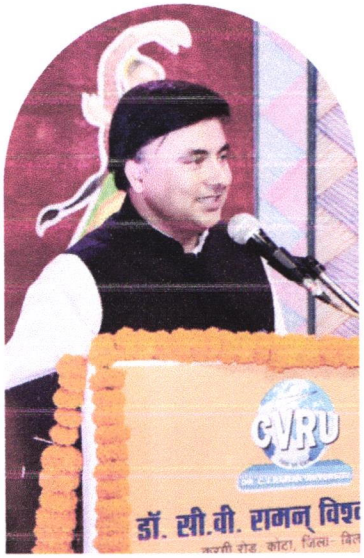

कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि गांव व आदिवासी समाज में बिखरी संस्कृति के संयोजन और संवंधन की जरुरत है। साथ ही भावी पीढ़ी को इसके मूल में ही हस्तांरित किया जाए यह बात भी जरुरी है। विश्वविद्यालय ने इसके लिए छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ की स्थापना की एवं लोक कलाकारों ने इस पर झमाझम प्रस्तुति दी। विश्वविद्यालय में नृत्य, संगीत और नाटक दी। कला-संस्कृति में सभी सराबोर शिक्षा के साथ कला संस्कृति की कक्षाएं भी जल्द ही शुरु की जाएगी।

Dr. C.V. Raman University ★ Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) ★ Registrar

रायगढ़ कथक

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय में रायगढ़ कथक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पहले सत्र में राजा चक्रधर और रायगढ़ कथक की जमीन विषय पर और दूसरे सत्र में कथक का पुर्नजागरण काल और रायगढ़ विषय पर देश के विख्यात कलाकार व अतिथि वक्ताओं ने अपनी बात रखी। महोत्सव में नित्याचार्य पंडित रामलाल को शारदा चौबे स्मृति लोक सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान कला के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

मुंबई से आए पद्मश्री और कला समीक्षक सुनील कोठारी ने कहा कि ऐसे सभी आयोजन का डाक्यूमेंटेशन किया जाना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक शिक्षण संस्थान ऐसे आयोजन करें और युवा कथक से जुड़े।

राजा चक्रधर के पुत्र राजा भानुप्रताप सिंह ने कहा कि डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय ने आज ऐतिहासिक आयोजन किया है। राजा साहब ने जो कथक की चिंगारी दी थी वह आज आग बनकर पूरी दुनिया में दहक रही है।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, साहित्यकार संतोष चौबे ने कहा कि विज्ञान और विकास ने जो रास्ते पकड़े हैं वह बहुत शुभ दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। जिस तरह का विकास हो रहा है उसमें प्रकृति का, कलाओं का और मनुष्यता का एक तरह से क्षरण हो रहा है। कला-साहित्य और संस्कृति में ही वह गुण है जो मनुष्य को संतुलित बना सकता है। विज्ञान के विकास से ही हमारा काम नहीं बनेगा। लोक और शास्त्रीय के बीच का जो पुल है, अगर वह कलाओं में जाए तो अलग-अलग आनंद हमें देगा।

दो दिवसीय कथक संगोष्ठी के समापन अवसर पर अध्यक्ष के रूप में उपस्थित जयपुर से आए कला समीक्षक डॉ. राजेश व्यास ने कहा कि यह आयोजन विरला आयोजन है। इसे अकादमिक दायरे में बांधा नहीं गया। बिखरे कथक को सहेजने का कार्य रायगढ़ कथक घराने ने किया है। लोक व शास्त्रीय में महीन भेद है, इसे समझने की जरूरत है।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि कथक को संरक्षित करने और इसे दुनिया के हर कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय में कथक केंद्र के साथ ही संग्रहालय की स्थापना भी की जाएगी। इसमें पांडुलिपियों का संग्रह किया जाएगा। कथक गुरुओं को जोड़ने के लिए संगोष्ठियां होंगी।

साहित्यकार और बनमाली सृजनपीठ बिलासपुर के अध्यक्ष सतीश जायसवाल ने कहा कि एक समय ऐसा आया कि लोगों ने अपने आनंद के या समुदाय के आनंद के लिए नहीं बल्कि सरकारी अनुदान के लिए कला विकास किया, जबकि हमारी परंपराएं सामुदायिक मनोरंजन के बीच लोक कला पल्लवित करने का काम करती रही है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

अलबेला रायगढ़

कथक रायगढ़ के चार घराने हैं रायगढ़ घर सबसे नवीन घराना है। राजा चक्रधर महाराज इस घराने के प्रवर्तक थे इसमें बोल और बंदिश की प्रकृति परक थी। इसमें ना केवल कथक का शुद्ध रुप सुंदरता को साकार किया गया बल्कि अभिनय अंग से इसे कल्पनाशीलता के साथ प्रस्तुत भी किया जाता है। लोककला महोत्सव के पहले दिन डॉ. मानव महंत एवं समूह ने अलबेला रायगढ़ की शानदार प्रस्तुति दी, जिसने लोगों का मन मोह लिया और इस शानदार प्रस्तुति ने लोगों को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

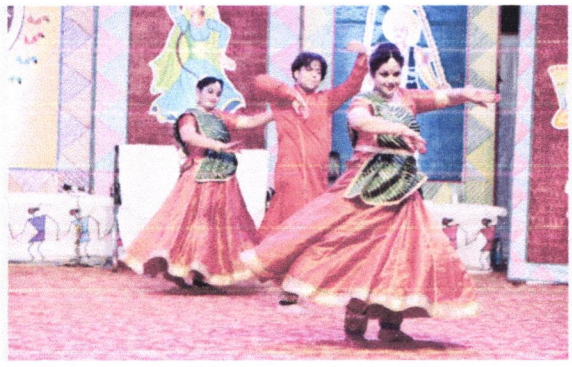

पांच मितान

पांच मितान यह कार्यक्रम छत्तीसगढ़ परंपरा को अपने साथ समोए हुए, छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोक गीत एवं लोक वाद्यों की प्रस्तुति, पांच व्यक्ति मिलकर करते है, इसलिए इस बैंड का नाम पांच मितान के नाम से जाना जाता है । रामन् लोक कला महोत्सव में हितेंद्र वर्मा ने छत्तीसगढ़ी फोक बैंड पांच मितान प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के प्रस्तुति से उन्होंने छत्तीसगढ़ी कला एवं पुरानी परंपरा को जीवंत किया, जिसे कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीण अंचल के लोगों ने नए रुप में सुना एवं इसकी कॉफी सराहना की।

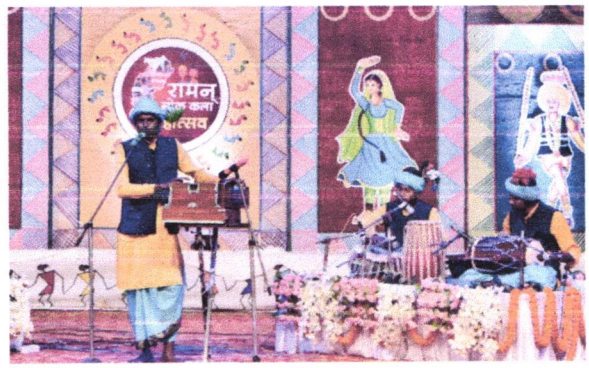

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

लोक कला मंच

रामन् लोककला मंच में हिलेंद्र ठाकुर व समूह ने अपनी प्रस्तुति में गणेश वंदना की एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी जिसमें प्रमुख रुप से सुआ, करमा, ददरिया जैसे विभिन्न पारंपरिक लोकगीतों एवं लोक नीतियों को प्रस्तुत किया। छत्तीसगढ़ की विलुप्त होती इस कला संस्कृति से दर्शकों को परिचित कराया।

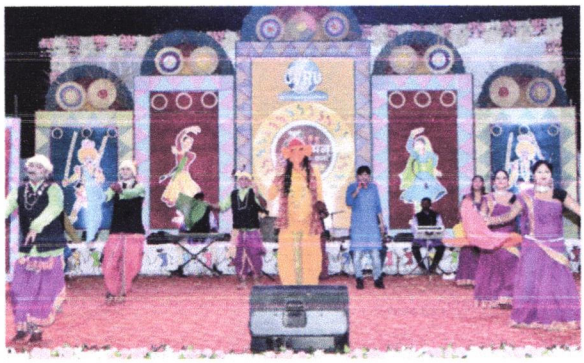

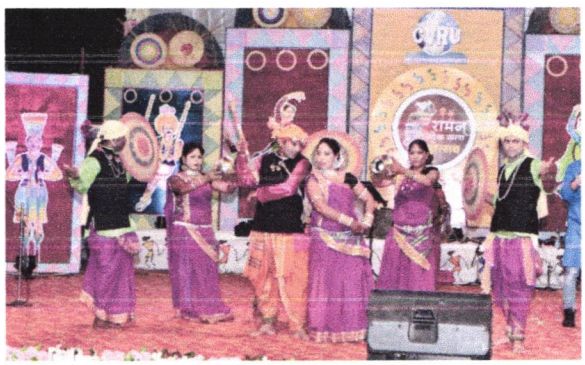

लोरिक चंदा कार्यक्रम

रामाधार साहू द्वारा लोरिक चंदा कार्यक्रम प्रस्तुत किया। लोरिक चंदा एक प्रेम गाथा है, जो राजकुमारी चंदा और अहीर लोरिक के प्रेम पर आधारित है। लोरिक चंदा लोकगाथा को छत्तीसगढ़ में चंदैनी गायन के रुप में भी जाना जाता है। रामाधार साहू (दुर्ग) लोरिक चंदा के प्रमुख कलाकार हैं जिन्होंने अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। इसके साथ ही इन्होंने राष्ट्रीय नाट्य शाला दिल्ली के द्वितीय वर्ष के छात्रों को छत्तीसगढ़ की लोक गाथा लोरिक चंदा की कार्यशाला का आयोजन भी किया है। रामन् लोक कला महोत्सव में रामाधार एवं साथियों द्वारा लोक गाथा लोरिक चंदा की मनमोहक प्रस्तुति दी गई।

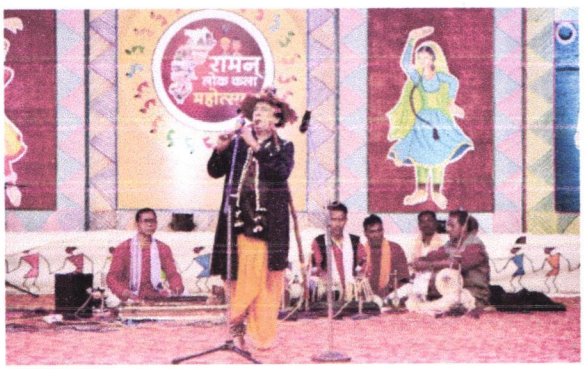

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रावत नाचा

रावत नाच को गहिरा नृत्य के नाम से भी जाना जाता है। यह नृत्य छत्तीसगढ़ के यादव समाज द्वारा देव प्रबोधिनी एकादशी से दिवाली के अवसर तक किया जाता है। लोग विशेष वेशभूषा पहनकर हाथ में सजी हुई लाठी लेकर टोली में गाते एवं नाचते हैं। यह शौर्य एवं श्रृंगार का नृत्य है इसमें दोहा गाते हुए तेजी गति से नृत्य करते हैं, इस नृत्य के प्रारंभ में देवी देवताओं की वंदना की जाती है। इस लोक नृत्य में प्रमुख रुप से मोहरी, गुदुम, ढोल, दफड़ा, टीमकी, झुमका, झुनझुनी, मृदंग विभिन्न वाधों का प्रयोग किया जाता है रामन् लोक कला महोत्सव के अवसर पर एन.सी.सी. कैडिट्स के स्टूडेंट्स ने रावत नाचा अत्यंत मनमोहक प्रस्तुति दी।

पंडवानी

पंडवानी का अर्थ है पांडववाणी अर्थात् पांडवकथा या महाभारत की कथा। पंडवानी की दो शैलियां हैं - एक है कापालिक शैली जो गायक-गायिका की स्मृति में या कपाल में विद्यमान है। दूसरी है वेदमती शैली जिसका आधार है शास्त्र। रश्मि शर्मा पंडवानी की चर्चित कलाकार है। वे पद्म विभूषण तीजन बाई को अपना आदर्श मानती है। रश्मि शर्मा प्रदेश के साथ-साथ देश में भी पंडवानी की प्रस्तुति दी है, तीजन बाई की तरह कापालिक शैली में प्रस्तुति देती है, उन्होंने बिना किसी परंपरागत शिक्षा के इस कला को सीखा और इसको जन-जन तक पहुंचा रही है। उन्होंने एकलव्य की तरह ही तीजन बाई की वीडियो को अपना गुरु मानकर पारंपरिक लोक गाथा की शिक्षा ली। रामन् लोक कला महोत्सव के अवसर पर रश्मी शर्मा ने मंच पर आकर्षक गीत-संगीत व नृत्य की प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोहा।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन द्वितीय दिवस

लोक महोत्सव के दूसरे दिन समूचा छत्तीसगढ़ रामन् विश्वविद्यालय के परिसर में नजर आया। लोक कला महोत्सव-2020 में लोक कलाकारों ने देर रात समां बांधे रखा। शाम होते ही लोक कार्यक्रमों का सिलसिला शुरु हुआ। इसमें कलाकारों ने ढोला मारु, गेड़ी, करमा, सुआ, ददरिया की शानदार प्रस्तुति दी। देवी आराधना के जसगीत ने भक्तिमय माहौल बनाया और अनुज नाईट की प्रस्तुति ने युवाओं में छत्तीसगढ़ी जोश का संचार किया।

मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित तखतपुर विधायक रशिम सिंह ने कहा कि इस विश्वविद्यालय कुलाधिपति संतोष चौबे शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। साक्षरता से लेकर कम्प्यूटर की संचार क्रांति तक और आज विश्वविद्यालयों की स्थापना तक उनका योगदान महत्वपूर्ण है। म.प्र. और छ.ग. में इन्हें भुलाया नहीं जा सकता है। बिलासपुर की धरती में कलाकारों, लेखकों और कवियों को अपनी ओर आकर्षित किया है, एक प्रवास के दौरान गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर जी यहां पर रुके थे उन्होंने अपनी रचना यहां पर की थी, जो भी आज बिलासपुर के रेलवे स्टेशन में लगा हुआ है।

विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित जिला पंचायत अध्यक्ष अरुण सिंह ने कहा कि सीवीआरयू कोटा क्षेत्र का गौरव है। यहां के युवा अब उच्च शिक्षा लेकर देश के कोने कोने में रोजगार के साथ खड़े हैं और अब कला के क्षेत्र की बारी है। डॉ. सी. वी. रामन् के द्वारा लोक कला महोत्सव के आयोजन से देश के विलुप्त होती कला एवं संस्कृति को मंच प्राप्त हो रहा है। लोक कला के संरक्षण के लिए विश्वविद्यालय यह कदम अत्यंत सराहनीय है।

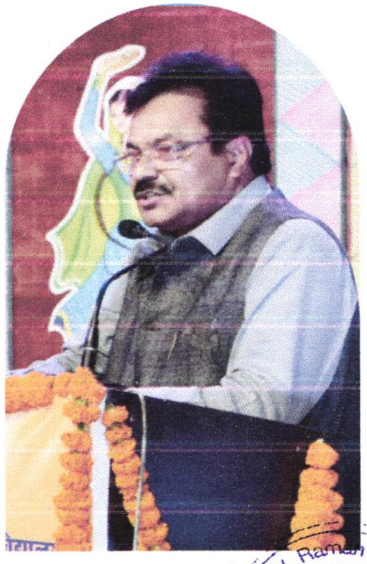

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि आज के वैश्विक युग में युवाओं को अपनी लोक कला और संस्कृति की जानकारी होना चाहिए। कला के साथ जीवन जीना ही वास्तविक जीवन होता है। जीवन का सच्चा आनंद एवं रस वास्तव में कला एवं संस्कृति है। विश्वविद्यालय के लिए यह गौरव की बात है कि आज हमारे बीच छत्तीसगढ़ के विख्यात लोक कलाकार है। हमें अपनी ऐसी विरासतों का सम्मान करना चाहिए।

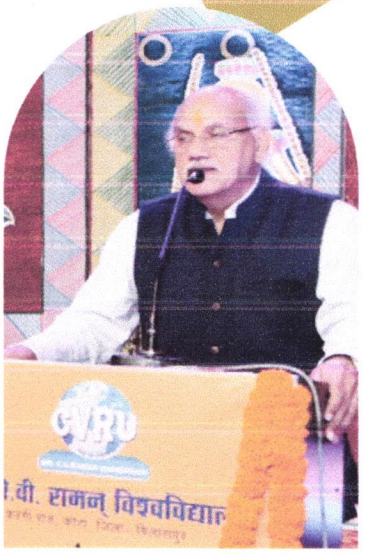

कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे कहा कि भारत एक सहिष्णु देश है। इसमें विश्व की सारी विधाएं संस्कृति इसमें समाहित है। विश्वविद्यालय द्वारा छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति एवं परंपरा को जीवंत बनाए रखने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। लोक कला संरक्षण के लिए 2019 से रामन् लोक कला महोत्सव प्रारंभ किया गया, जिसके चलते कला एवं संस्कृति के पुष्पित एवं पल्लवित होने का अनुकूल वातावरण निर्मित हुआ है। इससे छत्तीसगढ़ की नृत्य, रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला एवं आदिवासी लोक कलाकारों को विस्तार, प्रोत्साहन और कलाकारों के संरक्षण में मदद मिलेगी।

कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि लोक कला धरोहर को न केवल संरक्षित करने बल्कि उसे आगे बढ़ाने का दायित्व विश्वविद्यालय का है। विश्वविद्यालय नवोदित स्थानीय कलाकारों की प्रतिभा को आगे लाने, लोक कलाकारों को मंच प्रदान देने एवं ग्रामीण में लोक कला के प्रति जागरुकता लाने के उद्देश्य से रामन् लोक कला महोत्सव का आयोजन करते आ रहा है। इस आयोजन को क्षेत्र में अच्छी लोकप्रियता हासिल हुई है। स्थानीय कलामंच सतत् संपर्क में है और अपनी कलाओं को निखार कर मंच में प्रस्तुति देने के लिए उत्साहित है।

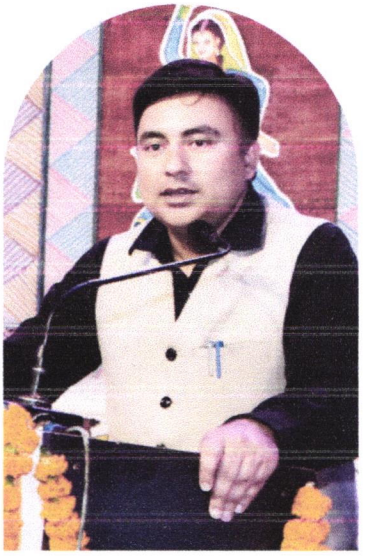

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

ढोला मारु

ढोला मारु प्रेम गाथा विशेष लोकप्रिय रही है इस गाथा की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आठवीं सदी की इस घटना का नायक ढोला राजस्थान में आज भी एक-प्रेमी नायक के रुप में स्मरण किया जाता है और प्रत्येक पति-पत्नी की सुन्दर जोड़ी को ढोला-मारु की उपमा दी जाती है इसमे राजकुमार ढोला और राजकुमारी मारु की प्रेमकथा का वर्णन है। राजस्थान की ग्रामीण स्त्रियाँ आज भी विभिन्न मौकों पर ढोला-मारु के गीत बड़े चाव से गाती है। रामन् लोक कला के अवसर पर राष्ट्रपति के हाथों नारी शक्ति गौरव सम्मान से सम्मानित लोक गायिका रजनी रजक (भिलाई) ने मनमोहक प्रस्तुति दी। और वह लोक कला संस्कृति विरासत को निरंतर बढ़ाने का कार्य कर रही हैं।

समूह नृत्य

छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में गेड़ी नृत्य को यहां के निवास करने वाले आदिवासी गोण्ड, माड़िया, मुरिया सभी प्रयोग करते हैं । लगभग 5 फीट के बांस को बराबर नाप में काटकर एक फीट में पैर रखने के लिए मजबूत पायदान तैयार किया जाता है जिस पर चढ़कर युवक मनचाहा नृत्य करता है । टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र द्वारा समूह नृत्य की प्रस्तुति दी गई जिसमें प्रमुख रुप से गेंड़ी और करमा नृत्य पर छात्रों ने प्रस्तुति देकर तालियां बटोरी सर्वप्रथम गणेश वंदना की गई, तत्पश्चात गेंड़ी एकल एवं जोड़ों में नृत्य करके मनमोहक प्रस्तुति दी गई।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

छत्तीसगढ़ी नाटक

रामन् लोक कला महोत्सव के अवसर पर एन.एस.एस. छात्रों के द्वारा छत्तीसगढ़ी नाटक पड़की परेवना नामक नाटक की प्रस्तुति दी गई जिसके द्वारा स्वच्छता का संदेश दिया गया है । इस संपूर्ण प्रस्तुति स्वच्छ भारत अभियान पर केंद्रित था।

लोकगीत

नवारंग समूह (मन्नु राजकांत) विश्वविद्यालय के चतुर्थ वर्ग कर्मचारी के द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की प्रस्तुति दी गई। साथ ही यह गीत नशा मुक्ति पर आधारित था अपने गीतों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान किया गया। रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को प्रथम बार मंच प्राप्त हुआ।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

अनुज नाइट

रामन् लोक कला महोत्सव के अवसर पर छत्तीसगढ़ी फिल्मों के अभिनेता पद्मश्री अनुज शर्मा एवं सह कलाकारों ने अनुज नाइट के माध्यम से छत्तीसगढ़ी गीत एवं नृत्यों की प्रस्तुति दी। अनुज शर्मा एवं साथियों की प्रस्तुति ने लोगों को अपनी कला संस्कृति से जोड़ते हुए कहा कि हमें अपने जड़ों से जुड़े रहने की आवश्यकता है आप कहीं भी रहे लेकिन अपने लोक कला संस्कृति से जुड़े रहें।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन तृतीय दिवस

रामन् लोक कला महोत्सव के तीसरे दिन विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया एवं विभिन्न प्रकार के स्टॉल के साथ मॉडल लगाये गये जिसमें छ.ग. सरकार के मंशानुसार नरवा-गरवा-घुरवा-बारी का मॉडल भी प्रदर्शित किया गया। जिसे आये हुये पालकों, छात्र-छात्राओं, ग्रामीणों ने कॉफी सराहा। महोत्सव में आने वाले लोक संस्कृति कार्यक्रमों के अलावा स्वादिष्ट छत्तीसगढ़ी व्यंजनों (चीला फरा, ठेठरी, खुरमी, लाई, बताशा, चना, चौसला, पपची, बोबरा) के साथ-साथ बच्चों के लिये विभिन्न मनोरंजन से भरपूर कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस महोत्सव में कोसा की साड़ी, चादर, कॉरपेट, हैण्डलूम, हैण्डीक्रॉफ्ट्स के अलावा आर्टिफिशियल आभूषण और हर्बल औषधि के स्टॉल भी लगाये गये। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए एक सभी वर्ग के लोगों को जोड़ने उनके मनोरंजन के लिए महोत्सव को मेला का स्वरुप प्रदान किया गया है। जिसमें झूले, खिलौने, निशानेबाजी आदि के स्टॉल लगाए हुए हैं। जहां छोटे-बड़े, महिला, बुजुर्ग वर्ग सभी उत्साह के साथ भाग लेकर आनंद का उत्सव मना रहे हैं।

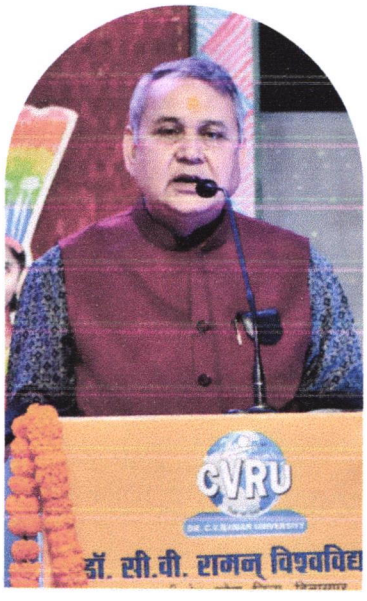

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित लोरमी के विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि जिस देश और राज्य की कला संस्कृति और सभ्यता की जड़ें मजबूत होगी, वह उतना ही समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि लोक कला महोत्सव के लिए डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय और कोटा का नाम देश में जाना जाएगा। और उन्होंने कहा लोक कला संस्कृति का सामाजिक जीवन से गहरा संबंध है तभी मनुष्य एक समूह या समाज में एक ही रीति से कुछ करता है। आदिवासी परंपरा एवं संस्कृति अत्यंत सरल एवं मनमोहक है, यहां के आदिवासी बच्चे इन कला एवं संस्कृति का प्रदर्शन करेंगे। इन्हें एक अच्छा मंच देने का सराहनीय कार्य भी विश्वविद्यालय कर रहा है।

Dr. C.V. Raman University ★ Registrar ★ Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

विशिष्ट अतिथि बेलतरा विधायक रजनीश सिंह ने कहा, विश्वविद्यालय देश का प्रथम विश्वविद्यालय है, जो उच्च शिक्षा के साथ लोक कला एवं संस्कृति के लिए भी निष्ठा से सार्थक रुप में कार्य कर रहा है। इसके लिए छत्तीसगढ़ी संस्कृति और लोग कला इतिहास में निश्चित रुप से शामिल किया जाएगा। क्षेत्र लोक कला संस्कृति एवं परंपरा के दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है। यहां की धरती में अनेकों आदिवासी, कला-संस्कृति पोषित एवं पल्लवित हो रही है, ऐसे में यह आयोजन सराहनीय है इसका लाभ स्थानीय कलाकारों को मिलेगा।

विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आर. पी. दुबे ने कहा कि विश्वविद्यालय लोक कला संस्कृति और विज्ञान को जोड़कर कार्य करेगा। इससे विद्यार्थियों को नए क्षेत्र में शोध और रोजगार मिल सकेगे। किसी भी संस्कृति एवं सभ्यता की स्थाई सफलता उसकी कला में निहित है । सामाजिक आदर्श आर्थिक वैभव और धर्म के रुप बदल सकते हैं, साम्राज्य बदल सकते हैं किन्तु कला में उनकी अमूल्य निधियां संचित रहती है। लोक कला स्फूर्ति, प्रोत्साहित, शिक्षित भी करती है। लोक कला कलाकारों को एक सूत्र में बांधने वाली शक्ति है जिसकी छाप जीवन पर सदा व्याप्त रहती है।

Dr. C.V. Raman University ★ Registrar ★ Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

भरथरी

भरथरी एक लोकगाथा है जो बिहार, उत्तर प्रदेश और बंगाल के बाद छत्तीसगढ़ की भी लोकगाथा बन गई। भरथरी लोकगाथा किसी विशेष जाति या समुदाय का गीत नहीं है बल्कि कलाकारों का गीत है ये कलाकार गीत गाते हुए स्वयं को योगी कहते हैं। प्रारंभ में कलाकार / योगी अकेले ही खंजरी बजाते हुए भरथरी लोकगाथा गाया करते थे लेकिन समय के साथ-साथ तबला, हारमोनियम और मंजीरा वाद्य यंत्रो के साथ कथा गायन किया जाने लगा, और अब इन वाद्य यंत्रों के बीच बैंजो ने भी अपना स्थान बना लिया। रामन् लोक कला के अवसर पर भिलाई से आये हुए लोक कलाकार अमृता बारले ने भरथरी की अत्यंत मनमोहक प्रस्तुति दी।

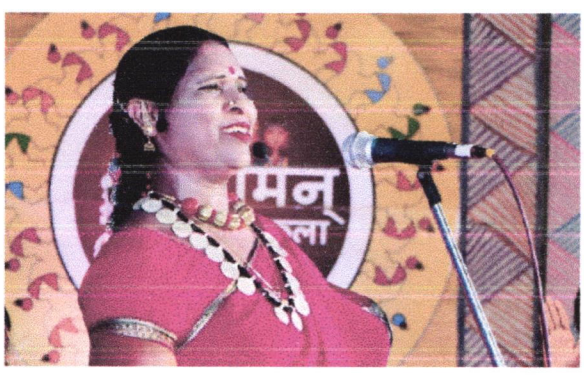

पंथी नृत्य

पंथी नृत्य दो प्रकार का होता है- बैठ पार्टी और खड़ी पार्टी। बैठ पार्टी में वाद्य यंत्र बजाने वाले बैठ कर वाद्य बजाते हैं और नर्तक दल इनके चारों ओर घूमते हुए नृत्य करते हैं इस नृत्य में करतब नहीं दिखाया जाता है बैठ पार्टी में दो व्यक्ति गाने वाले होते हैं जिसमें एक गाता है और दूसरा दुहराता है इसके विपरीत खड़ी पार्टी में वादक खड़े होकर नाचते हुए वाद्य यंत्रों को बजाते हैं, इसमें एक व्यक्ति समूह के साथ नृत्य करते हुए गाता है और बाकी नर्तक उसे दुहराते हैं। खड़ी पार्टी में करतब दिखाया जाता है। छत्तीसगढ़ी बोली को नहीं जानने-समझने वाले देश-विदेश के लोग भी पंथी नृत्य देख खो जाते हैं। वर्तमान समय में भी यह छत्तीसगढ़ के कलाकारों के परिश्रम और लगन का परिणाम है कि पंथी नृत्य देश-विदेश में प्रतिष्ठित है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

बांस गीत

बांस गीत, छत्तीसगढ़ की यादव जातियों द्वारा बांस के बने हुए वाद्य यंत्र के साथ गाये जाने वाला लोकगीत है। बांस गीत मुख्यतः राउत या अहीर जाति के लोगों द्वारा गाया जाता है। समुदाय के केवल पुरुष ही इस वाद्ययंत्र को बजाते हैं। आमतौर पर इस वाद्य यंत्र को कलाकार खुद ही बनाते हैं लेकिन कई बार बढ़ई की मदद से भी इसका निर्माण करवाते हैं। सर्वप्रथम सही बांस का चुनाव किया जाता है फिर उसमें चार छिद्र कर, ऊनी फूलों और रंगीन कपड़ों से साज-सज्जा की जाती है। पारंपरिक प्रदर्शन की बात की जाए तो प्रस्तुति में दो वादक के साथ एक कथाकार और एक रागी होता है। कथाकार जब गाता है या कोई किस्सा सुनाता है तब रागी प्रोत्साहन भरे शब्दों के साथ हामी भरता है। प्रस्तुति से पूर्व माँ सरस्वती, भैरव, महामाया और गणेश जैसे देवी-देवताओं की प्रार्थना की जाती है। विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से बांस गीत जैसी विलुप्त होती पारंपरिक लोक गीत को सहेजने हेतु प्रदेश के राबेली समूह के कलाकारों को मंच प्रदान किया, जिससे कलाकारों का आत्मविश्वास में वृद्धि हुई।

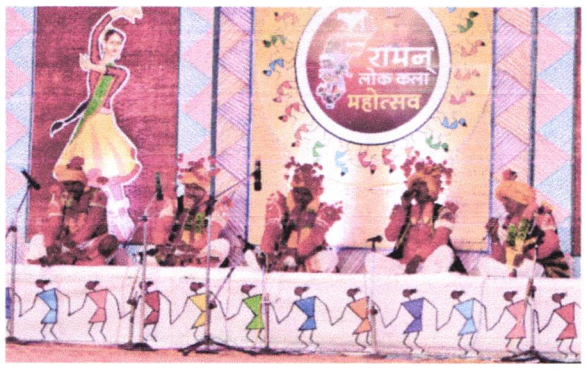

समूह नृत्य

टैगोर विश्वकला संस्कृति केंद्र का समूह नृत्य गेंड़ी :- विश्वविद्यालय के प्रथम द्वितीय और तृतीय वर्ष के छात्र छात्राओं ने गेंड़ी नृत्य की सुंदर प्रस्तुति दी। जिसने आए हुए ग्रामीण अंचल एवं छात्रों सभी का मन मोह लिया।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

फाग गीत

फाग गीत मुख्य रूप से पुरुषों का गीत है जो बसंत पंचमी से लेकर होलिका दहन के सवेरे तक गाया जाता है। फाग होली के अवसर पर गाया जाने वाला एक लोकगीत है। यह मूल रूप से उत्तर प्रदेश का लोक गीत है पर समीपवर्ती प्रदेशों में भी इसको गाया जाता है। सामान्य रूप से फाग में होली खेलने, प्रकृति की सुंदरता और राधाकृष्ण के प्रेम का वर्णन होता है। प्रायः बृजभूमि में कृष्ण-राधा और गोपियों की होली का संग होता है। नगाड़ा, मजीरा, डफली आदि वाद्यों का प्रयोग होता है। ग्राम बीजा के कलाकारों त्रिलोकी सिंह क्षत्रीय एवं साथियों के द्वारा फाग गीत की प्रस्तुति दी गई ग्रामीण अंचल से लोगों को पहली बार मंच प्राप्त कर । जिससे वह काफी हर्षित हर्षित और उनका उत्साहवर्धन हुआ।

कला मंच

रामन् लोक कला महोत्सव के अवसर पर स्वर साधना लोक कला मंच के द्वारा जितेन्द्र गुप्ता और उनके साथियों ने छत्तीसगढ़ी लोक गीत एवं नृत्य की प्रस्तुति दी। जिसमें ग्रामीण अंचल से आये हुए स्वर साधना लोक कला मंच के कलाकारों ने पहली बार मंच पाकर प्रसन्न हुए और उनका उत्साह वर्धन हुआ।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोककला महोत्सव 2020

स्टॉल का विवरण

ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग - विश्वविद्यालय के ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग के डॉ. अनुपम तिवारी ने लोगों को विभाग द्वारा विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि क्षेत्र के युवाओं एवं ग्रामीण ऑर्गेनिक खाद का प्रयोग करके मृदा की गुणवत्ता को बनाए रखने एवं उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

रेशम बोर्ड विभाग - वैज्ञानिक श्रीनिवास ने रेशम के कोकून से कपड़े तैयार करने की विधि को जीवंत बताया और उन्होंने इसके दो फायदे भी बताएं पहली वृक्ष लगाने अच्छी वातावरण और दूसरी रेशम के कोकून मिल जाते हैं। इस स्टाल के माध्यम से उन्होंने बताया कि रेशम की कृषि कर छात्र एवं ग्रामीण स्वरोजगार परख हो सकते हैं उन्होंने लोगों को रेशम की कृषि हेतु प्रेरित किया।

अभियांत्रिकी विभाग - अभियांत्रिकी विभाग द्वारा लिफ्ट पेयजल परियोजना का मॉडल बनाया गया। यह मॉडल आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। इसमें इंजिनियरिंग स्टूडेंट एवं अन्य छात्रों ने बड़ी ही रुचि दिखाई। इस मॉडल की बहुत ही प्रशंसा की गई।

खेल विभाग - डॉक्टर युवराज श्रीवास्तव के द्वारा बताया गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। साथ ही जीवन के लिए खेल महत्वपूर्ण हैं उन्होंने छात्रों को अपने दैनिक जीवन में खेल को शामिल करने के लिए कहा।

हथकरघा विभाग - श्री संतोष जी ने वस्त्र परिधान के धागे, रंग, बुनाई, सफाई, सिलाई के बारे में स्टॉल के माध्यम से जानकारी प्रदान की और उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को हथकरघा से जुड़कर आत्मनिर्भर एवं रोजगार हेतु प्रेरित भी किया। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को हथकरघा उद्योग के माध्यम से उद्यामिता की ओर बढ़ने हेतु प्रेरित भी किया।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य - इस स्टाल के माध्यम से लोक मंच एप्लीकेशन के बारे में बताया गया, जिसके माध्यम से छत्तीसगढ़ की कविता, कहानी, लोकगीत सभी संग्रह एक स्थान पर प्राप्त करने के संबंध में जानकारी प्रदान की गई, जिसका उपयोग करके हम अपने लोक कला से जुड़े रहने के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

रामन् लोककला महोत्सव 2020

स्टॉल का विवरण

खादी से कपड़ा निर्माण - बिलासपुर के श्रीमती मंजू सिंह खादी से वस्त्र निर्माण करने के प्रोसेस को बताया और कोसे व खादी से बने वस्त्रों को स्टॉल में भी दिखाया। उन्होंने ग्रामीण प्रौद्योगिकी के माध्यम से छात्रों को रोजगार परक होने के लिए प्रेरित भी किया।

माटी कला बोर्ड - इस स्टाल के माध्यम से घर में ही माटी से बने उत्पादों के बारे में जानकारी प्रदान की। जिसके माध्यम से छात्र घर में पढ़ाई के साथ-साथ स्थानीय कला कौशल से जुड़कर अपना व्यवसाय आरंभ कर सकते हैं। और आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

छत्तीसगढ़ी व्यंजन स्टॉल - श्री आशुतोष ने गढ़ कलेवा नाम से छत्तीसगढ़ी व्यंजन की स्टाल लगाई, जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार की छत्तीसगढ़ी व्यंजन को तैयार करने की विधिवत जानकारी साझा किया और छात्रों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया।

छत्तीसगढ़ी परिधान फोटोग्राफी - श्री परमानंद ने छत्तीसगढ़ी परिधान के संबंध में जानकारी प्रदान की एवं उन्हें उनकी फोटोग्राफी के माध्यम से विभिन्न अंचलों में भिन्न प्रकार की छत्तीसगढ़ी परिधान के संबंध में रोचक तथ्यों के बारे में भी बताया।

क्रॉफ्ट आर्ट - इस स्टॉल के माध्यम से ग्रामीण अंचल में उपलब्ध होने वाले पारंपरिक ज्वेलरी, पारंपरिक खेल, पारंपरिक खिलौने के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई गई। जिससे छत्तीसगढ़ की लोक कला की परम्परा एवं संस्कृति की जानकारी प्रदान की गई।

पेंटिंग प्रदर्शनी - इस स्टॉल के माध्यम से बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा मिनाक्षी शर्मा ने पेंटिंग की प्रदर्शनी लगायी। और अपनी कला कौशल के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई।

रायगढ़ का एकताल आर्ट - इस स्टॉल के माध्यम से झारा शिल्पकारों ने पीतल से बनने वाले आर्ट का जीवंत प्रदर्शन किया, और पीतल से बनने वाले आकर्षक बर्तन, मूर्ति, सामानों के बारे में जानकारी प्रदान की। साथ ही इस स्थानीय कला कौशल को अपनाकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

रामन् लोककला महोत्सव 2020

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोककला महोत्सव 2020

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अख़बार

बिलासपुर, शनिवार, दिनॉक 29 फरवरी 2020

आयोजन • सीवीआरयू में रायगढ़ कथक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

कला, साहित्य व संस्कृति से मनुष्य संतुलित होता है: चौबे

संस्कृति का संवर्धन जरूरी: गौरव

सीवीआरयू में लोककला महोत्सव का आगाज हुआ

नईदुनिया

बिलासपुर, शनिवार, दिनॉक 29 फरवरी 2020

कला, साहित्य व संस्कृति से संतुलित होता है मनुष्यः चौबे

सीवीआरयू में लोककला महोत्सव का रंगारंग आगाज

नवभारत

बिलासपुर, शनिवार, दिनॉक 29 फरवरी 2020

कला, साहित्य और संस्कृति से संतुलित होता है मनुष्य : चौबे

आज का दिन ऐतिहासिक पंडित रामलाल

हरिभूमि

बिलासपुर

शनिवार 29 फरवरी 2020

सीवी रामन विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं लोककला महोत्सव का शुभारंभ

लोक कला व संस्कृति को किया जा रहा संरक्षित

अलबेला की प्रस्तुति ने मोहा मन

मनुष्य कला, साहित्य व संस्कृति से संतुलित

आज का दिन ऐतिहासिक: रामलाल

पत्रिका

बिलासपुर, शनिवार, दिनॉक 29 फरवरी 2020

सीवीआरयू में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

कला, साहित्य और संस्कृति से मनुष्य संतुलित होता है-चौबे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

कार्यक्रम में मंचस्थ अतिथि।

आज का दिन ऐतिहासिक -पंडित रामलाल

अनुज नाइट आज

लोकस्वर

संभाग का प्रथम प्रभात दैनिक

बिलासपुर

शनिवार 29 फरवरी 2020

पद्मश्री और कला समीक्षक सुनील कोठारी व रायगढ़ घराने देश के विख्यात कथक कलाकार पहुंचे

सीवीआरयू में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क

कथक की धमक पूरी दुनिया में

Dr. C.V. Raman University Registrar Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

हरिभूमि
बिलासपुर, रविवार, दिनाँक 01 मार्च 2020

दो दिवसीय कथक संगोष्ठी के समापन अवसर पर विवि के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा-

सीवीआरयू में होगी कथक केंद्र व संग्रहालय की स्थापना

भारतीय संस्कृति में नृत्य की परंपरा

कथक का उज्जवल भविष्य

विवि में बिखरी छत्तीसगढ़ लोक कला

खास बात

कला के साथ जीवन जीना ही वास्तविक जीवन होता है: चौबे

दो कार्यक्रम होंगे आज

स्वरोजगार की जानकारी भी..

नवभारत
बिलासपुर, रविवार, दिनाँक 01 मार्च 2020

लोक कलाकारों ने रंगारंग प्रस्तुति से बांधा समां

सीवीआरयू के लोक महोत्सव में बिखरी छत्तीसगढ़ लोक कला की छटा, शाम से देर रात तक हुए कार्यक्रम

• नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर.
www.navabharat.org

लोक महोत्सव के दूसरे दिन शनिवार को लोक कलाकारों ने देर रात समां बांधे रखा. शाम होते ही लोक कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हुआ जिसमें कलाकारों ने ढोला मारू, गेड़ी, करमा, सुआ, ददरिया की शानदार प्रस्तुति दी. इसके बाद देवी आराधना के जसगीत ने भक्तिमय माहौल बनाया और अनुज नाईट की प्रस्तुति ने देर रात तक समां बांधे रखा. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तखतपुर की विधायक रश्मि सिंह ने कहा कि इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे शिक्षा के क्षेत्र में बरसों से काम कर रहे हैं. साक्षरता से लेकर कम्प्यूटर की संचार क्रांति तक और आज विश्वविद्यालयों की स्थापना तक उनका योगदान महत्वपूर्ण है. इसलिए मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भुलाया नहीं जा सकता है. विशिष्ट

अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष अरूण सिंह ने कहा कि सीवीआरयू कोटा क्षेत्र का गौरव है. यहां के युवा अब उच्च शिक्षा लेकर देश के कोने- कोने में रोजगार के साथ खड़े हैं. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे कहा कि भारत एक सहिष्णु देश है जिसमें विश्व की सारी विधाएं, संस्कृति इसमें समाहित है. छत्तीसगढ़ की लोक कला संस्कृति की बात है तो अभी इसे और ऊंचाइयों तक जाना है और ऐसे आयोजन के माध्यम से युवा और अंचल के लोग इसे समझ पाएंगे. विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि लोक कला धरोहर को न केवल संरक्षित करने बल्कि उसे आगे बढ़ाने का दायित्व विश्वविद्यालय का है. लोक कला, संस्कृति महोत्सव कराने वाला यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है.

सीवीआरयू में होगी कथक केंद्र व संग्रहालय की स्थापना: चौबे

• नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर.
www.navabharat.org

भारतीय संस्कृति में नृत्य की परंपरा रही है परंपरा में जड़त्व आ जाता है, यदि उसमें बदल न हो. बिखरे कथक को सहेजने का कार्य रायगढ़ कथक घराने ने किया है. आज भी रायगढ़ घराना दूसरे घरानों से कितना अलग है, कितना ऊर्जावान है, कितना विशेष है, इस पर विस्तार से चर्चा किए जाने की जरूरत है.

यह बातें दो दिवसीय कथक संगोष्ठी के समापन अवसर पर अध्यक्ष के रूप में उपस्थित जयपुर से आए कला समीक्षक डॉ. राजेश व्यास ने कहीं. आगे कहा कि यह आयोजन विरला आयोजन है, विशेष बात यह है कि इस आयोजन को विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है, और इसे अकादमिक दायरे में बांधा नहीं गया है. उसाहित्यकार और वनमाली सृजनपीठ बिलासपुर के अध्यक्ष सतीश जायसवाल ने कहा कि एक समय ऐसा आया कि लोगों ने अपने आनंद के या समुदाय के आनंद के लिए नहीं बल्कि सरकारी अनुदान के लिए कला विकास किया, जबकि हमारी परंपराएं सामुदायिक मनोरंजन के बीच लोक कला पल्लवित करने का काम करती रही है. समापन अवसर पर ग्वालियर से भगवानदास माणिक, खैरागढ़ से चेतना ज्योतिषी ब्यौहार, डॉ. सुचित्रा हरमलकर इंदौर, वासंती वैष्णव, ज्योतिषी वैष्णव, सुनील वैष्णव, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.रवि प्रकाश दुबे, सम कुलपति प्रो.पी.के.नायक, कुलसचिव गौरव शुक्ला, दूरवर्ती शिक्षा के निदेशक अरविंद तिवारी सहित सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, कला प्रेमी और विद्यार्थी उपस्थित थे.

कला के साथ जीना ही वास्तविक जीवन: चौबे

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे. उन्होंने कहा कि आज के वैश्विक युग में युवाओं को अपनी लोक कला और संस्कृति की जानकारी होना चाहिए. उनके साथ जीवन जीना ही वास्तविक जीवन होता है. उन्होंने कहा कि विवि के लिए यह गौरव की बात है कि आज हमारे बीच छत्तीसगढ़ के विख्यात लोक कलाकार है हमें अपनी ऐसी विरासतों का सम्मान करना चाहिए.

आज के कार्यक्रम

1 मार्च को भिलाई की अमृता बारले भरथरी, पंथी नृत्य मुंगेली, राकेश ग्रुप बांस गीत, टैगोर विश्वकला संस्कृति केंद्र का समूह नृत्य, फाग गीत ग्राम बीजा और लोक कला मंच के कार्यक्रम होंगे.

स्वरोजगार की जानकारी भी..

विश्वविद्यालय में रमन लोक कला महोत्सव में सरकारी विभागों और निजी संस्थानों ने अपने स्टाल भी लगाए हैं. इस अवसर पर विद्यार्थियों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने सभी ने उत्पादों की लाइव जानकारी दी. इसके साथ सरकारी की योजना नरूवा, गरूआ, घुरवा और बाड़ी के मॉडल को भी सबके सामने रखा. इसके साथ केंद्रीय रेशम बोर्ड ने भी रेशम उत्पादन की लाइव जानकारी दी. मेले में युवाओं ने छत्तीसगढ़ी व्यंजन और झूलों का जमकर आनंद लिया.

दैनिक भास्कर | 02-Mar-2020
बिलासपुर भास्कर Page 3

दैनिक भास्कर — बिलासपुर जिला

रामन लोक कला महोत्सव • तीसरे दिन उमड़ी भीड़, अतिथियों ने कार्यक्रम को सराहा

कलाकारों ने दी प्रस्तुतियां, चीला, फरा, ठेठरी छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का लोगों ने उठाया आनंद

विज्ञान को जोड़कर कार्य: कुलपति

अगले साल महोत्सव नए रूप में

पांच साल में अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाएगा महोत्सव: संतोष

कहानीकारों ने किया कविता और कहानी का पाठ

जिंदगी लाइव

सीवी रामन विवि में लोक कला महोत्सव के तीसरे दिन लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा

कला महोत्सव प्रदेश को समृद्धशाली बनाने बड़ा कदम

वर्तमान समय में शिक्षा और खेल के साथ लोक कला में भी उज्जवल भविष्य के अपार अवसर

सीवीआरयू में कविता और कहानी पाठ

नवभारत

डॉ.सीवी.रामन विश्वविद्यालय में लोक कलाकारों ने दी प्रस्तुति

प्रदेश को समृद्ध बनाने लोक महोत्सव की परिकल्पना सराहनीय: धर्मजीत

अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाएगा महोत्सव

लोक कला संस्कृति के साथ विज्ञान को

सीवीआरयू में कविता और कहानी पाठ

छत्तीसगढ़ी व्यंजन का स्वाद भी

अगले साल महोत्सव नए रूप में

बिलासपुर

कार्यक्रम • सीवी रामन विश्वविद्यालय में आयोजित रामन लोक कला महोत्सव के तीसरे दिन कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से किया मंत्रमुग्ध

कला, संस्कृति और सभ्यता से समृद्ध होगा हमारा राज्य: धर्मजीत

लोक कला के साथ विज्ञान को जोड़कर करेंगे कार्य

अगले साल महोत्सव नए रूप में नजर आएगा: कुलपति

छत्तीसगढ़ी व्यंजन का स्वाद भी

सीवीआरयू में किया गया कविता व कहानी का पाठ

50 सरकारी और गैर सरकारी स्टॉल, विद्यार्थियों को मिल रही स्वरोजगार की जानकारी

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

KARGI ROAD, KOTA, BILASPUR (C.G.) Ph. : +91-7753-253801

Email: admission@cvru.ac.in, info@cvru.ac.in

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)